# श्री गुरू तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश गुरूपरब

भारत सरकार ने श्री गुरू तेग बहादुर जी (1621– 2021) के 400वें प्रकाश गुरूपरब को भव्य रूप से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने की घोषणा की है। इस संदर्भ में भारत सरकार द्वारा माननीय प्रधानमंत्री जी अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया। इस समिति का उद्देश्य नीतियों तथा कार्यक्रमों को अनुमोदित करना और उनसे संबंधित प्रबंधन तथा मार्गदर्शन कार्य करना है। इस समिति के गठन के संदर्भ में 24 अक्तूबर 2020 को एक गजट अधिसूचना जारी की गई। इस उच्च स्तरीय समिति की वर्तमान संरचना 27 दिसंबर 2021 को अधिसूचित की गई। इस समारोह के अंतर्गत देश के विभिन्न भागों में अनेक कार्यक्रम तथा कार्यकलाप आयोजित किए गए हैं। ये कार्यक्रम 21 अप्रैल 2022 तक चलेंगे। श्री गुरू तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व का समापन समारोह 20 एवं 21 अप्रैल 2022 को लाल किले में आयोजित किया जाएगा। इसके अंतर्गत अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने प्रस्तावित हैं।

श्री गुरू तेग बहादुर जी (1621–1675) नौवें सिख गुरू थे। गुरू तेग बहादुर जी, प्रथम शहीद गुरू अर्जुन देव जी के पुत्र तथा श्री गुरू हरगोबिंद जी (छठे सिंह गुरू तथा श्री अकाल तख्त के संस्थापक एवं गुरू गोबिंद सिंह जी के दादाजी) के पौत्र थे। दृढ़ सिद्धांतों वाले एवं निर्भीक योद्धा के रूप में विख्यात गुरू तेग बहादुर जी उच्च कोटि के आध्यात्मिक विद्वान एवं कवि थे, जिनके लिखे 116 शबद, सिखों के मुख्य धर्मग्रंथ श्री गुरू ग्रंथ साहिब में शामिल हैं। गुरू तेग बहादुर को छठे मुगल शासक औरंगजेब के आदेश पर दिल्ली में मौत के घाट उतार दिया गया था। दिल्ली स्थित गुरुद्वारा सीसगंज साहिब और गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब सिखों के पवित्र स्थल हैं। सीसगंज साहिब में गुरू तेग बहादुर जी को शहीद किया गया था और रकाबगंज साहिब में उनका अंतिम संस्कार हुआ। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा 2003 में जारी नानकशाही कैलेंडर के अनुसार प्रतिवर्ष 24 नवंबर को गुरू तेग बहादुर जी का शहीदी दिवस मनाया जाता है।

गुरू तेग बहादुर जी को गुरू हरकिशन जी ने गुरू गद्दी सौंपी। गुरू तेग बहादुर जी का लालन–पालन सिख संस्कृति के अनुसार हुआ। उन्हें धनुर्विद्या और घुड़सवारी का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही उन्हें वेदों, उपनिषदों और पुराणों जैसे आध्यात्मिक ग्रंथों की भी शिक्षा प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी प्रवीणता प्राप्त की। गुरू तेग बहादुर जी को एकांत में रहकर लंबे समय तक चिंतन करना पसंद था। मुगलों के खिलाफ हुए युद्ध में गुरू जी की बहादुरी को देखते हुए उन्हें, 'तेग बहादुर' (तलवार की शक्ति) की उपाधि दी गई।

1664 में गुरू तेग बहादुर जी को 9वां सिख गुरू घोषित किया गया। गुरू तेग बहादुर जी ने भारत में व्यापक भ्रमण किया। गुरू तेग बहादुर जी ने हिमालय की तलहटी में आनंदपुर साहिब नामक शहर की स्थापना की। उन्होंने शिवालिक की पहाड़ियों, दक्षिणी पंजाब, हरियाणा, बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश और असम में भी व्यापक यात्राएं की। कश्मीरी पंडितों की धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए संघर्षरत गुरू तेग बहादुर जी को 1675 में मुगल शासक औरंगजेब के आदेश पर मौत के घाट उतार दिया गया। गुरू तेग बहादुर जी को 4 माह के लिए सरहिंद के जेल में कैद रखा गया और नवंबर 1675 में दिल्ली भेज दिया गया। गुरू जी को भगवान से अपनी निकटता सिद्ध करने के लिए कोई चमत्कार दिखाने को कहा गया। गुरू तेग बहादुर जी ने इस बात पर आपत्ति जताई कि जादू–टोने की शक्ति प्राप्त करना भगवान के निकट होने का कोई प्रमाण होता है। चमत्कार दिखाने से इनकार करने पर गुरू तेग बहादुर जी को इस्लाम कबूल करने को कहा गया। परंतु उन्होंने साफ इनकार कर दिया। उनके साथ गिरफ्तार उनके तीन साथियों को गुरू तेग बहादुर जी के सामने ही मौत के घाट उतार दिया गया। इसके बाद भी जब गुरू तेग बहादुर जी ने इस्लाम कबूल करने से इनकार किया, तो दिल्ली के चांदनी चौक इलाके में उनका सिर कलम कर दिया गया। दिल्ली में स्थित गुरुद्वारा शीशगंज और गुरुद्वारा रकाबगंज दो ऐसे ऐतिहासिक स्थल हैं, जो गुरू जी की पावन स्मृति तथा उनके बलिदान से जुड़े हैं।

यह हम सब के लिए ऐसा अवसर है कि हम गुरू तेग बहादुर जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें तथा अपने व्यवसाय तथा संस्थागत संसाधन उनकी याद में समर्पित करते हुए अपनी ऊर्जा को इस प्रकार केंद्रित करें, ताकि हममें यह दृष्टिकोण उत्पन्न हो कि मानवता की सेवा में गुरू जी का योगदान कितना महत्वपूर्ण था। गुरू तेग बहादुर जी ने भारत के पूर्वी भाग में कई वर्ष बिताए और आज के उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और असम जैसे सभी प्रमुख स्थानों की यात्रा की। कश्मीरी पंडितों की रक्षा करते हुए गुरू तेग बहादुर जी ने सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी स्मृति तथा विरासत ऐसा शक्तिशाली सूत्र है, जो समस्त भारत को एकता के सूत्र में पिरोता है।

गुरू तेग बहादुर जी की पवित्र रचनाएं, भक्ति भाव तथा मानव मात्र के जीवन के उद्देश्य का चिंतन दर्शन हैं। गुरू तेग बहादुर जी एकमात्र गुरू थे, जिन्होंने अपनी बानी की राग जयजयवंती में रचना की। गुरू तेग बहादुर जी को ऐसे गुरू के रूप में याद किया जाता है, जो धार्मिक स्वतंत्रता और देश की एकजुटता के लिए संघर्षरत रहे। गुरू तेग बहादुर जी अपनी वीरता और सामाजिक समरसता के सरोकार के लिए सब की स्मृति में सदैव बसे रहेंगे।

डाक विभाग श्री गुरू तेग बहादुर जी की 400वीं जयंती के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता हैं।


**आभार :**

| | | |
|---|---|---|
| डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण, विवरणिका | : | सुरेश कुमार |
| विरूपण कैशे | : | श्रीमती नीनू गुप्ता |
| पाठ | : | संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त सामग्री के आधार पर |


# तकनीकी आंकड़े

# TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्यवर्ग | : | 2500 पैसे |
| Denomination | : | 2500 p |
| मुद्रित डाक–टिकटें | : | 504000 |
| Stamps Printed | : | 504000 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : | वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : | Wet Offset |
| मुद्रक | : | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : | Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html



मूल्य ₹ 5.00

## 400th Prakash GuruParab of Sri Guru Tegh Bahadur Ji

Government of India has announced commemoration of 400th Prakash GuruParab of Sri Guru Tegh Bahdaur Ji (1621-2021) on national and international level in befitting manner. Government of India has constituted High Level Committee under the chairmanship of Hon'ble Prime Minister to approve policies, programs and supervise and guide the commemoration vide Gazette notification issued on 24th October 2020. The present composition of the High Level Committee has been notified on 27th December 2021. A variety of programs and activities have been organized in different parts of the country under the above commemoration. The commemoration is to close on 21st April 2022. It is proposed to organize variety of cultural programs on 20th and 21st April 2022 at Red Fort under the closing ceremony.

Sri Guru Tegh Bahadur Ji (1621-1675) was the ninth Sikh Guru. Guru ji was the grandson of first Sikh martyr Guru Arjan Devji and son of Guru Hargobind Ji (Sixth Guru and founder of Sri Akal Takht and grandfather of Guru Gobind Singh Ji). Considered as a principled and fearless warrior, Guru ji was a learned spiritual scholar and a poet whose 116 hymns are included in Sri Guru Granth Sahib, the main text of Sikhism. Guru Tegh Bahadur was executed on the orders of Aurangzeb, sixth Mughal emperor, in Delhi, India. Sikh holy premises Gurudwara Sis Ganj Sahib and Gurdwara Rakab Ganj Sahib in Delhi mark the places of execution and cremation of Guru Tegh Bahadur. His martyrdom is remembered as the Shaheedi Divas of Guru Tegh Bahadur every year on 24th November, according to the Nanakshahi calendar released by the Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee in 2003.

Guru ji was given Guru Gaddi by Guru Harikrishan Ji. Guru Tegh Bahadur Ji was brought up in Sikh culture and trained in archery and horsemanship. Guru ji was also taught the classic spiritual texts like Vedas, Upanishads, Puranas and proficiency of Indian classic musicology. Guru ji preferred prolonged spells of seclusion and contemplation. Guru Ji's valour shown in a battle against Mughals, gave him the name as Tegh Bahadur (Might of the Sword).

In 1664 Guru ji was declared as the ninth Guru of Sikhs. Guru Tegh Bahadur travelled extensively across India. Guru Ji founded the city of Anandpur Sahib in the foothills of Himalayas. Guru Tegh Bahadur Ji made extensive travels in Shivalik Hills, South Punjab, Haryana, Bihar, Bengal, Uttar Pradesh and Assam. Guru Ji was executed in November 1675 in Delhi by the order of Mughal Emperor Aurangzeb, for taking up the cause of religious freedom of Kashmiri Pandits. Guru Tegh Bahadur was kept in jail for four months in Sarhind and then transferred to Delhi in November 1675. Guru Ji was asked to perform miracle to prove his nearness to the God. Guru Ji questioned the idea, stating that "occult powers were not a proof of one's proximity to the God". After his refusal to demonstrate a miracle, Guru Ji was asked to convert to Islam but Guru Ji refused. Three of his associates who were arrested with Guru Ji were put to death in front of him. Then after his refusal to convert to Islam, Guru Ji was beheaded in Chandni Chowk, Delhi. Gurdwara Sis Ganj and Gurdwara Rakab Ganj in Delhi, two historical sites are associated with the sacred memory and supreme sacrifice of Guru Ji.

This is an opportunity for all of us to offer a great tribute to Guru Ji and devote our professional & institutional resources and our energy towards providing a fresh perspective on the role of Guru Ji in serving the mankind. Guru Tegh Bahadur Ji spent many years in Eastern part of India and visited all major places in today's UP, Bihar, Bengal, Assam. Guru Ji made supreme sacrifice of his life while pleading for the cause of Kashmiri Pandits. His memory and legacy serve as a great uniting force in the idea of India.

The sacred compositions of Guru Tegh Bahdur Ji are a great reflection on the idea of devotion and purpose of human life. Guru Tegh Bahadur Ji was the only Sikh Guru who composed his Bani in Raga Jayjawanti. Guru Tegh Bahadur Ji is remembered as a Guru who stood for religious freedom and solidarity of the country. Guru Ji would always be remembered for his bravery and concern for social harmony.

It is a matter of pride for Department of Posts to issue a Commemorative Postage Stamp on "Sri Guru Tegh Bahadur Ji to Commemorate his 400th Birth Anniversary."

**Credits**

| | | |
|---|---|---|
| Stamp/ FDC/ Brochure | : | Sh. Suresh Kumar |
| Cancellation Cachet | : | Smt. Nenu Gupta |
| Texts | : | Referenced from the contents furnished by Ministry of Culture |

# भारतीय डाक विभाग
# Department of Posts India

## विवरणिका
## BROCHURE

गुरुद्वारा, गुरु का महल, श्री अमृतसर
**Gurudwara, Guru Ka Mahal, Sri Amritsar**

*400 वां साल th Year*

प्रकाश गुरुपरब श्री गुरु तेग बहादुर साहब जी
Prakash GuruParab Sri Guru Tegh Bahadur Sahib Ji